International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 5, May- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अधुनातन काल के हिन्दी कहानियों में नारी चेतना

जी.कोदंडा रामुलु, एम.ए., हिन्दी प्रवक्ता, के.टि.एस. सरकारी महाविद्यालय, रायदुर्ग–515865

प्रस्तावना :

हिन्दी गद्य विधाओं में कहानी सब से सशक्त विधा बनकर विकसित हुई है । आज भी कहानी के पाठक अन्य सभी विधाओं की तुलना में सर्वाधिक है । यही कारण है कि ''पत्र पत्रिकाओं में कहानियों की मॉग सर्वाधिक है । यही नहीं, अपितु कई पत्रिकाएँ तो केवल कहानी पत्रिकाएँ ही हैं, जो समकालीन कथाकारों की स्तरीय कहानियों के साथ–साथ उभरते हुए कहानीकारों की कहानियॉ भी छापती है । विगत 90 वर्षों में हिन्दी कहानी ने जो आशातीत प्रगति की है, वह उत्साह वर्धक है । अन्य सभी गद्य विधाओं की अपेक्षा आज की हिन्दी कहानी में युग बोध की क्षमता सब से अधिक दिखाई पडती है ।

कहानी के बारे में प्रसिद्व कवि 'अज्ञेय' का कथन है –''कहानी एक सूक्ष्मदर्शी यंत्र है, जिसके नीचे मानवीय अस्तित्व के दृश्य खुलते हैं ।'' हिन्दी कहानी की विकास यात्रा का प्रारंभ 1900 ई. के आसपास ही मानना समीचीन है , क्योंकि इससे पूर्व हिन्दी में '' कहानी जैसी किसी विधा का सूत्रपात नही हुआ था ।

आधुनिक काल के कहानी

समकालीन हिन्दी कहानिकारों में नारी चेतना को सुंद रूप से चित्रित करनेवालों में प्रेमचंद प्रमुख हैं । प्रेमचंद की 'कफन' कहानी में 'बुधिया' नामक स्त्री पात्र द्वारा यह समझाया कि 'बुधिया' की आने से ही घीसू और माधव दोनों आलसियों के पेट दो जख भरने लगी । प्रेमचंद की और एक कहानी 'बडे घर की बेटी' में भी नारी की पात्र को उजागर किया । मुख्य रूप से प्रेमचंद की कहानियों में दलित, शोषित, समाज का चित्रण है । प्रेमचंद के बाद प्रसाद का प्रमुख रूप से हम देख सकते हैं । प्रेमचंद युग के एक प्रतिभाशाली कथाकार के रूप में 'प्रसाद' प्रमुख हैं । इनके पॉच कहानी और इंद्रजाल । कुल मिलकर 69 कहानियॉ इन संकलनों में संकलित की गई हैं । उनकी कहानियों में अनुभूति की तीव्रताख्ख कल्पना की प्रचुरता के साथ–साथ नारी–चेतना का भी महत्वपूर्ण स्थान है । उनकी सब कहानियॉ समाज की समस्याओं से खासकर नारी समस्या और उस समस्या की पूर्ति के बारे में सोच–विचार करने लायक भी ।

आधुनिक कहानीकारों में श्री विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक की कहानी 'ताई' और रक्षाबंधन में भरी नारी की मानसिक स्थिति का प्रमुख रूप से चित्रित किये हैं साहनी भी प्रसिद्व हैं । श्री भीष्म साहनी के युग को तकनीकी युग कहने पर भी इनकी रचनाओं पर ग्रामीण प्रभाव और स्त्री–पुरष संबंध का सुदर वर्णन है । आधुनिक हिन्दी कथाकारों में श्री.मोहन राकेश भी प्रमुख हैं । इन्होंने आधे–अधूरे

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 5, May- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

नामक नाटक में ''सावित्री'' नामक 'स्त्री' को प्रमुख रूप से चित्रित की है । जहॉ तक महिला और श्राामिक वर्ग का प्रभाव पडता है, वहॉ तक कहानी को ले जाने में श्री मोहन राकेश सफल रहें । उनके द्वारा लिखित नए बादल 'जानवर और जानवर' आदि कहानी संग्रहों में कुछ ऐसी कहानियॉ हैं । जिनमें नारी ही प्रमुख हैं । कुल मिलकर मोहन राकेश की पचास कहानियॉ संग्रहित हैं, उनमें अधिक कहानियॉ सामाजिक समस्या और नारी चेतना से संबंधित हैं ।

स्वातंत्रोत्तर काल में नारी की दशा और दिशा में विलक्षण परिवर्तन हुआ । संविधान द्वारा प्रदत्त अधिकारों ने नारी की प्रबुद्व चेतना को जागृत किया ।

घर की चार दीवारों में बंदी नारी दहलीज लांघकर पुरूषों के साथ परिश्रम करने लगी । श्रीमती उषा प्रियंवदा जी ने अपने कहानी साहित्य में नारी जीवन की सहज, स्वाभाविक, अवस्थाओं, अंतर्द्वन्द्व, कुण्ठा अकेलेपन आदि पहलुओं पर दृष्टिपात किया है । जिंदगी और गुलाब के फूल, एक कोई दूसरा, कितना बडा झूठ, शून्य तथा अन्य रचनाऍ, कहानी संग्रहों में संकलित विभिन्न कहानियों में मध्यवर्गीय नारी की मानसिकता सुख–दुख, आशा–निराशा, संघर्ष, पीडा, कुण्ठा, अहं, तनाव, संघर्ष, विद्रोह आदि स्थितियों का मनो वैज्ञानिक चित्रण किया गया है ।

नारी शिक्षा, महत्वाकांक्षा, स्वतंत्रता की ललक एवं आत्म निर्भरना ने नारी की परंपरागत भूमिका पर प्रश्न चिह्न खडा कर दिया है और पहली बार नारी को यह एहसास हुआ कि घर की चार दीवारों के बाहर एक दुनिया है, जो उसका इंतजार कर रही है । नारी घर तथा नौकरी दोनों मोर्चों पर सवार हो गई ।

श्री फणीश्वर नाथ रेणु की कहानी रसप्रिया में बाल विधवा 'रमपतिया' के चरित्र में नारी की अंतर्वेदना पाठकों के हृदय को झकझोर देती है ।

'हार' नामक कहानी में श्रीमती मन्नू भंडारी ने पति–पत्नी दोंनों चुनाव में भाग लेते हैं, लेकिन पत्नी अपनी आभरणों को बेचकर खर्च करती है, फिर भी नहीं जीतने की धारणा मन में लेकर अपनी मतदान भी पति को डालकर पति की जीत में भाग लेकर कहानी की रूप में विजय को पाती है ।

आधुनिक महिला कथाकारों में श्रीमती मृदुला गर्ग, शशि प्रभा शास्त्री, निरूपमा, कृष्णा सोबती ममता कालिया, दीप्ति खंडेलवाल, सुनीता जैन, चित्रा मुदगल, मालती जोशी आदि महिला कथाकारों ने समाज को सचेत करती हुई, नारी समस्याओं पर लडाई करते हुए कहानियॉ लिखी हैं ।

उपसंहारः अंततोगत्वा हम कह सकते हैं कि 'अधुनातन काल में नारी चेतना अधिक है । महिला लेखिकाओं द्वारा, समाज में स्त्रियों की गौरव बढने लगा । ऑचल के लोगों में भी धरी–धीरे परिवर्तन आ रही है । आगे भविष्य में भी महिला कथाकारों की संख्या बढने की संभावना भी है ।–